International Journal of Sanskrit Research 2024; 10(4): 98-100

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2024; 10(4): 98-100
© 2024 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 26-05-2024
Accepted: 29-06-2024

डॉ. सपना चन्देल
सहायक आचार्य संस्कृत–विभाग हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय समरहिल, शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. सपना चन्देल
सहायक आचार्य संस्कृत–विभाग हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय समरहिल, शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल में वर्णित आयुर्विज्ञान

डॉ. सपना चन्देल

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2024.v10.i4b.2427

प्रस्तावना

आयुर्वेद एक वैज्ञानिक जीवन दर्शन है, जिसमें चिकित्सा का वर्णन किया गया है जो मनुष्य को दीर्घायुष्य प्रदान करके परम सुख की प्राप्ति करवाता है। सम्पूर्ण आयुर्वेद की आधार शिला उसके मूलभूत सिद्धान्तों पर ही अवलम्बित है उन मौलिक सिद्धान्तों के बिना आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त करना सर्वथा असम्भव है। अतः उनका अध्ययन एवं ज्ञान नितान्त अपेक्षित है।[1] इसमें प्रतिपादित सिद्धान्त इतने सामान्य एवं जन जीवनोपयोगी हैं कि सहज ही वे जीवन के साथ आत्मसात् हो जाते हैं। उन्हें जीवन से दूर नहीं किया जा सकता और उसके बिना रहा भी नहीं जा सकता। वे आदिकाल से चले आ रहे हैं और अनन्तकाल तक चलते रहेंगे। पृथ्वी पर जब तक जीवन के लक्षण विद्यमान हैं, तब तक आयुर्वेद भी रहेगा और उसमें प्रतिपादित सिद्धान्त भी।[2] आयुर्वेद के शाश्वत् एवं अनादि होने के प्रमाण भी हमें संस्कृत विद्वानों एवं मर्मज्ञों के कण्ठों से सुनने को मिल जाते हैं–

> सोऽयमायुर्वेदः शाश्वतो निदिश्यते, अनादित्वात्
> स्वभावसंसिद्धलक्षणत्वात्, भावस्वभावनित्यत्वात्।[3]

आयुर्वेद की अपनी चिन्तन पद्धति है, अपना मौलिक दर्शन है और उससे अनुप्राणित अपनी मौलिक विचारधारा है जिसने उसके आधारभूत सिद्धान्तों, रोग निदान पद्धति एवं चिकित्सा सिद्धान्तों की उद्भावना की है। वे इतने व्यापक, सार्थक, उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण हैं कि आज भी बदले हुए परिवेश में उनकी उपादेयता को नकारा नहीं जा सकता। यही उनके शाश्वत होने का एक पुष्ट प्रमाण है।[4]

आयुर्वेद के वर्णन से पूर्व आयु शब्द का अर्थ ज्ञान अति आवश्यक है। आयु शब्द आ उपसर्गपूर्वक इण् धातु से उण् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है।[5] चरक संहिता में चेतनानुवृत्ति (गर्भ से मरण पर्यन्त चेतना का रहना) जीवित, अनुबन्ध, धारि इन सबका अर्थ आयु है अर्थात् ये आयु के नामान्तर हैं।[6] शरीर, इन्द्रिय, मन और आत्मा के संयोग को आयु कहा गया है। धारि, जीवित, नित्यग, अनुबन्ध इन पर्यायों से भी आयु कहा जाता है।[7] संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ में भी आयु को जीवन की अवधि कहा गया है।[8]

अष्टाङ्गहृदय में कहा गया है, धर्म, अर्थ और सुख का साधन आयु है। इस आयु की जिस पुरूष को चाह हो, उसे चाहिये कि वह आयुर्वेद के उपदेशों में अतिशय आदर करे।[9] आयुर्वेद ने पुरूषार्थ चतुष्टय में धर्म, अर्थ काम और मोक्ष को स्वीकारा है।[10] अमरकोष में जीवित काल को आयु कहा गया है।[11] ऋग्वेद में क्षय रहित आयु की प्राप्ति[12] तथा यज्ञ से आयु दीर्घ होती है वर्णित है।[13]

भारत में चिकित्सा विज्ञान का आरम्भ ऋग्वैदिक काल में ही हो गया था। पूर्व वैदिक युग में यद्यपि कुछ शारीरिक व्याधियों का संकेत मात्र ही मिलता है किन्तु अथर्ववेद तक आते–आते भैषज्य–विज्ञान का विशद प्रसार हो गया।[14] यह आयुर्वेद अथर्ववेद का उपाङ्ग है 'आयुषः पालनं वेदमुपवेदमथर्वणः' चरक संहिता में भी आयु का वेद अथर्ववेद ही है ऐसा वर्णन उपलब्ध होता है।[15] चरण व्यूह तथा प्रस्थान भेद में आयुर्वेद को ऋग्वेद का उपवेद माना गया है।[16]

आयुर्वेद दो शब्दों से मिलकर बना है 'आयुष् + वेद' आयुष् शब्द की व्युत्पत्ति आ उपसर्ग पूर्वक इण् धातु उण् प्रत्यय से जीवन अर्थ में कही गई है।[17] आयुष का अर्थ जीवन, जीवन की अवधि इत्यादि है। वेद शब्द का अर्थ ज्ञान है। यही वेद शब्द' आयुष् के साथ मिलकर आयुर्वेद बनता है। जिसका अर्थ है चिकित्सा शास्त्र।।[18] इसे आयु का विज्ञान भी कहा गया है।[19] हिन्दी विश्वकोश के अनुसार आयुर्विद्यते ज्ञायते लभ्यते वा अनेन, विद् करणे घञ् प्रत्यय से आयुर्वेद शब्द बनता है।[20]

पौराणिक कोश[21] एवं संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ[22] के अनुसार आयु सम्बन्धी एवं चिकित्सा शास्त्र आयुर्वेद कहलाता है। आयुर्वेद नाम क्यों पड़ा इसके विषय में चरक ऋषि कहते हैं–'तदायुर्वेदयतीत्यायुर्वेदः'[23] अर्थात् जो आयु का ज्ञान कराता है उसे आयुर्वेद कहा जाता है। जिस ग्रन्थ में हित आयु के लिए हित (पथ्य') अहित (अपथ्य) इस आयु का मान (प्रमाण और अप्रमाण) और आयु का स्वरूप बताया गया है उसे आयुर्वेद शास्त्र कहा है।[24]

सुश्रुत संहिता के अनुसार जिसमें आयु हो अथवा जिसके द्वारा आयु जानी जाती हो या जिससे आयु का विचार या आयु प्राप्ति की जाती है उसे आयुर्वेद कहा जाता है।[25] जिस शास्त्र में आयुष्य के लिए हितकारक और अहितकारक पदार्थों का उल्लेख हो और रोगों के निदान अर्थात् उत्पन्न होने का प्रधान कारण और उनकी शान्ति का उपाय अर्थात् चिकित्सा का वर्णन किया गया हो उसे विद्वान लोग आयुर्वेद कहते हैं।[26] अनेक शास्त्रों के ज्ञान से शून्य अल्प बुद्धि वाले वैद्यों को रोगों का ज्ञान सुगमता से कराने के निमित्त रोगविनिश्चय ग्रन्थ भी आयुर्वेदिय पद्धति है।[27] सुखपूर्वक अनेक वर्षों तक जीवन प्राप्त हो इसलिए आयुर्वेद से सम्बन्धित योगतरंगिणी का निर्माण किया गया है, ऐसा ग्रन्थ के अंत में वर्णित किया है।[28] जिससे मानव के रोगों का प्रतिकार होने के साथ–साथ उनकी आयु एवं जीवन की रक्षा तथा वृद्धि हो सके वही आयुर्वेद का प्रमुख लक्ष्य है।[29] शारंधरसंहिता में भी कहा गया है कि शरीर के चार पदार्थ साधन (धर्म,अर्थ, काम, मोक्ष) मनुष्य की देह की रक्षा करते हैं जिसके कारण मनुष्य रोग से अपने शरीर की रक्षा करता है।[30] काश्यप संहिता में भी कहा गया है जिस ज्ञान के द्वारा आयु का ज्ञान प्राप्त हो अथवा आयु की प्राप्ति हो उसका नाश न हो उसे आयुर्वेद कहते हैं।[31]

चरक संहिता में स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य का रक्षण और रूग्ण व्यक्ति के रोग का निवारण ही आयुर्वेद का प्रयोजन है।[32] धन्वन्तरि सुश्रुत इत्यादि को आयुर्वेद के प्रयोजन के विषय में बताते हुए कहते हैं कि हे पुत्र सुश्रुत! रोग से पीड़ित मनुष्यों का रोग निवारण करना और स्वस्थ मनुष्य के स्वास्थ्य की रक्षा करना ही आयुर्वेद का प्रयोजन है।[33]

ऋग्वेद संसार में सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ है जिसमें आयुर्विज्ञान का प्रतिपादन किया गया है जो ईश्वर द्वारा बुद्धि प्रधान सृजन मनुष्य के लिए हितकारी है। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल में (अक्षत पूर्णायु) क्षयरहित आयु की प्राप्ति तथा उत्तम गौ का दूध पीने फलदायक अन्न खाने से यज्ञ से आयु दीर्घ होती है वर्णन प्राप्त होता है– 'विश्वायुर्धेह्यक्षितम्'[34] स्तुतियों से भी आयु वृद्धि[35] का तथा पर्जन्य से औषधियों[36] के उत्पन्न होने का वर्णन मिलता है।

ऋग्वेद में एक स्थान पर कहा गया है कि राष्ट्र के वैद्यों को चाहिए कि वे रोज प्रातःकाल उत्तम यान में बैठकर राष्ट्र निवासियों के स्वास्थ्य का निरीक्षण करें।[37] सूर्य किरणों से सब रोग बीज को दूर करके आरोग्य बढ़ाता है और दीर्घायु प्रदान करता है।[38] तदनन्तर जल के औषधिय गुणों का विवेचन किया है कि जल में अमृत है। जल में औषधि के गुण धर्म हैं। जल में सब औषधियाँ है और यह हमारे शरीर को औषधि गुण दे और हमें दीर्घायु बनाये जिससे दीर्घ आयु तक सूर्य को देखें।[39]

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 34वें सूक्त में आयुर्वैज्ञानिक तथ्यों का विवचेन किया गया है कि आकाश से, पृथ्वी से, जलों से रोगनिवारक पदार्थों की प्राप्ति करवाने से सदा हृष्ट–पुष्ट और स्वस्थ रहने की और बाल बच्चों की सुरक्षा के लिए वात–पित कफ की (विषमता को दूर करके) समता का सुख देने का वर्णन उपलब्ध होता है।[40] पृथ्वी, जल और अग्नि मुख्यतया इन तीन तत्त्वों से बना यह शरीर रूपी रथ है। प्राण, मन और वाणी ये इस रथ के तीन पहिये हैं। अथवा वात, पित और कफ ये इसके तीन पहिये हैं। समान स्थान वाले सत्त्व, रजस और तमस ये इस रथ के बन्धन स्थान है। इस शरीर रूपी रथ में शब्द रूपी अश्व को जोता जाता है। इस रथ में सवार आत्मा और परमात्मा अपने सब कार्यों का सम्पादन करते हैं।[41] ऋग्वेद में जलचिकित्सक रूद्र द्वारा रोगों को शान्त तथा रोगबीज और अनिष्ट भाव को दूर करने का भी वर्णन मिलता है।[42]

उदय होते हुए सूर्य की किरणों से हृदय के रोग अर्थात् क्षय आदि तथा पीलिया आदि रोग नष्ट होते हैं।[43] औषधियों को मानव की सम्पत्ति कहा गया है।[44] एक स्थान पर अग्नि को रोगों का नाशक एवं आयु बढ़ाने वाला भी कहा गया है[45] तथा मनुष्य की आयु सौ वर्ष कही गई है।[46] सोम रस को औषधियों का राजा तथा दीर्घ जीवन देने वाला औषधि कहा है।[47] सोम से ही सब औषधियाँ उत्पन्न होती हैं ऐसा वर्णन भी उपलब्ध होता है।[48] एक स्थान पर अश्विन देवों द्वारा परावृक ऋषि को दृष्टि सम्पन्न किया एवं लंगड़े लूले को चलने फिरने योग्य बना दिया।भेड़िए द्वारा घायल चिड़िया को आरोग्य युक्त कर दिया वर्णित है।[49]

रुद्र वैद्यों का नाम है और गाँव में सब प्राणिमात्र पुष्ट और नीरोगी रहे तथा द्विपद और चतुष्पाद की शान्ति इनके द्वारा रहती है।[50] नीरोगता प्रदान करने के लिए रुद्र से प्रार्थना की गई है[51] तथा इनके द्वारा हाथों में रोगनिवारक औषधियाँ धारण करने और हम सबको आंतरिक स्वास्थ्य, बाह्य दोषों का प्रतिबंध तथा वमन विरेचन आदि देता है।[52] अश्विन देवों द्वारा जराजीर्ण च्यवन ऋषि से कवच के तुल्य बुढ़ापे की चमड़ी या झुर्री उतारकर उसे तरुण तथा दीर्घायु बनाने का वर्णन भी मिलता है।[53] वन्ध्या स्त्री को पुत्र प्राप्ति[54] एवं स्त्री के पैर टूटने पर उसके स्थान पर लोहे की टाँग तुरन्त ही अश्विन देवों द्वारा लगाई गई थी।[55] अश्विन कुमारों द्वारा अन्धे कण्व को दृष्टि, नृपद पुत्र को श्रवण शक्ति से युक्त कराया था।[56] इन्होंने अथर्ववंशोद्भव दधीची ऋषि को घोड़े का सिर लगाया जिससे उसने इन्हें मधु विद्या का उपदेश दिया। कहा भी गया है कि अवयवों को जोड़ने की विद्या इन्हें इन्द्र से प्राप्त हुई थी।[57] उत्तम औषधियों को साथ रखने के कारण इन्हें उत्तमवैद्य कहा गया है।[58] एक स्थान पर कहा गया है कि ये औषधियाँ उत्पन्न होती है और औषधियों से अन्न। अतः जब जल और औषधियों से उत्पन्न अन्न का हम भक्षण करेंगे, तब हमारा शरीर हृष्ट–पुष्ट होगा।[59] पका हुआ अन्न पुष्ट कारक रोगों का नाशक कहा गया है।[60] प्रथम मण्डल के अन्तिम सूक्त में विष को नष्ट करने वाली निन्यानवे औषधियों का एवं मधुला औषधि का वर्णन मिलता है जो विष को अमृत बना देती है।[61]

निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि ऋग्वेद के प्रथम मण्डल में संक्षिप्त रूप में आयुर्विज्ञान की मान्यताओं एवं विचारों को बड़ी निपुणता के साथ प्रकाशित किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. आयुर्वेद दर्शन, पृ० 1–2
2. आयुर्वेद के प्रेरणा स्रोत,पृ० 155
3. चरक संहिता, सूत्रस्थान, अध्याय 30.27
4. आयुर्वेद दर्शन, भूमिका भाग
5. संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, पृ. 196
6. वेदं चोपदिश्यायुर्वाच्यं तत्रायुश्चेतनानुवृत्तिर्जीवितमनुबन्धो धारि चेत्येकोऽर्थः।चरक संहिता, सूत्रस्थान, अध्याय 30.22
7. शरीरेन्द्रियसत्त्वात्मसंयोगो धारि जीवितम्। नित्यगश्चानु बन्धश्च पर्य्यायैरायुरुच्यते।। वही, 1.42
8. संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, पृ. 196
9. आयुः कामयमानेन धर्मार्थसुखसाधनम्। आयुर्वेदोपदेशेषु विधेयः परमादरः।। अष्टाङ्गहृदय, सूत्रस्थान 1.2
10. योग और आयुर्वेद, पृ. 13
11. अमरकोष, 2.8.120
12. विश्वायुर्धेह्यक्षितम्, ऋग्वेद, 1.7.7
13. वही, 1.71.6
14. ऋग्वेद में विविध विधाएँ, पृ. 101
15. तत्र भिषजा पृष्टेनैवं चतुर्णामृक्सामयजुरथर्ववेदानामात्मनोऽथर्ववेदे भक्तिरादेश्या। चरक संहिता, सूत्रस्थान, 30.21
16. आयुर्वेद की आचार्य परम्परा और आरोग्य साधना, पृ. 7
17. संस्कृत शब्दार्थ–कौस्तुभ, पृ. 196
18. वही, पृ. 196
19. हिन्दी पर्यायवाची कोश, पृ. 67
20. हिन्दी विश्वकोश, द्वितीय भाग, पृ. 636
21. पौराणिक कोश, पृ. 47
22. संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, पृ. 196
23. चरक संहिता, सूत्रस्थान, 30.23
24. हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्थ हिताहितम् मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते।। वही, 1.41
25. आयुरस्मिन् विद्यतेऽनेन वा आयुर्विन्दयतीत्यायुर्वेदः। सुश्रुत संहिता, 1.13
26. आयुर्हिताहितं व्याधेर्निदानं शमनं तथा। विद्यते यत्र विद्वद्भि स आयुर्वेद उच्यते।। भावप्रकाश, पूर्वखण्ड, 1.3
27. नानातन्त्रविहीनानां भिषजामल्पमेधसाम्। सुखं विज्ञातुमातङ्कमयेव भविष्यति। माधवनिदान पञ्चनिदानलक्षण, 1.3
28. एषा योगतरंगिणीसमभिधा साध्वी कृता संहिता संक्षिप्ता। सरसा सुखेन सुचिरं जीयादनेकाः समाः।। योगतरंगिणी, भाग–2, 41.20
29. आयुर्वेदीय रोग विज्ञान एवं विकृति विज्ञान, पृ. 1
30. धर्मार्थकाममोक्षाणां शरीरं साधनं यतः।

अतो रुग्भ्यस्तनुं रक्षेन्नरः कर्मविपाकवित् । शारंगधरसंहिता, प्रथम खण्ड 5. 53
31. विद् ज्ञाने धातुः 'विद्लृ' लाभे च आयुरनेन ज्ञानेन विद्यते ज्ञायते, विन्दन्ते लभ्यते न रिष्यतीत्यायुर्वेदः। काश्यप संहिता, 1.10
32. प्रयोजनं चास्य स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणमातुरस्य विकारप्रशमनं च। चरक संहिता, 30.26
33. वत्स सुश्रुत! इह खल्वायुर्वेदप्रयोजनं– व्याध्युपसृष्टानां व्याधिपरिमोक्षः स्वस्थस्य रक्षणं च। सुश्रुत संहिता, सूत्रस्थासन, 1.12
34. (क) ऋग्वेद, 1.7.7.
(ख) पाहि सदमिद् विश्वायुः।। वही,1.27.3
(ग) वही, 1.31.5
(घ) वही, 1.71.6
35. पीत्वा गिर्वणो गिर इमा भवन्तु विश्वतः।
वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः।। वही,1.10.12
36. अव सृजा वनस्पते देव देवेभ्यो हविः। प्र दातुरस्तु चेतनम्। वही, 1.13.11
37. या सुरथां रथीतमो भा देवा दिविस्पृश अश्विना ता हवामहे। वही, 1.22.2
38. (क) हिरण्य पाणिमृतये सवितारमुपह्वये। स चेता देवता पदम्। वही, 1.22. 5
(ख) अपामीवां वाधते वेति सूर्य। वही,1.35.9
39. अप्सु मे सोमो अब्रवी दन्तर्विश्वानि भेषजा
अग्नि च विश्ववंशभुवमापश्च विश्वभेषजीः।।
आपः पृणीत भेषजं।। ऋग्वेद, 1.23.20–21
40. त्रिनो अश्विना दिव्यानि भेषजा त्रिः पार्थिवानि त्रिरु दत्तमद्यभः।
ओमानं शंयोर्ममकाय सूनवे त्रिधातु शर्म वहतं शुभस्पती।। वही, 1.34.6
41. क्व त्री चक्रा त्रिवृतो रथस्य क्व त्रयो बन्धुरो ये सनीलाः कदा योगो वाजिनो रासभस्य येन यज्ञं नासत्योपयाथः। ऋग्वेद संहिता, 1.34.9
42. गाथपतिं मेद्यपतिं रूद्रं जलापभेषजम्। तच्छंयोः सुम्नमीमहे। वही, 1.43.4
43. उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुतत्रयां दिवम्।
हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय। वही, 1.50.11
44. या पर्वतेष्वोषधीष्वाप्सु। वही 1.51.3
45. (क) तमु त्वा वृत्रहन्तमं यो दस्यू.रवधूनुषे द्युम्नैरभिणोनुमः। वही, 1.78.4
(ख) वही, 1.95.16
46. शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा। वही, 1.89.9
47. जीवातुं न मरामहे प्रियस्तोत्रो वनस्पतिः।। वही, 1.91.6
48. त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वा। वही, 1.91.22
49. याभिः शचीभिर्वृषणा परावृजं प्रान्धं श्रोणं चक्षस एते कृथः।
याभिर्वार्तिका ग्रसिताममुञ्चत ताभिरूषु ऊतिभिरश्विना गतम्।। वही,1.112.8
50. इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्नातुरम्।। वही,1.114.1
51. वही,1.114.2
52. दिवो वराहमरुषं कपर्दिन त्वेषं रुपं नमसा नि ह्वयामहे।
हस्ते बिभ्रद् भेषजा वार्याणि शर्म वर्मच्छर्दिरस्मभ्य यंसत्।। वही,1.114.5
53. (क) जुजुरुषो नासत्योत वव्रिं प्रामुञ्चतं द्रापिमिव च्यवनात्।
प्रातिरतं जहितस्यायुर्दस्रा दित् पतिमकृणुतं कनीनाम्।। वही,1.116.10
(ख) वही, 1.117.13
54. वही,1.116.13
55. चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पर्ण माजा खेलस्य परितक्म्याम्।
सद्यो जङ्घामायसीं विश्पलायै धने हिते सर्तवे प्रत्ययधत्तम्।। वही, 1.116.1
56. (क) वही, 1.117.8
(ख) वही, 1.117.17
57. (क) आथर्वणायाश्विना दधीचेऽश्ण्यं हि शिरःप्रत्यैरयतम्।
स वां मधु प्र वोचदृतायन त्वाष्ट्रं यद् दस्रावपिकक्ष्य वाम्।। वही,1.117.22
(ख) वही, 1.119.9
58. युवं ह स्थो भिषजा भेषजेभि। वही,1.157.6
59. यदपामोषधीनां परिशमारिशामहे वातापे पीव इद भव। वही, 1.187.8
60. करम्भ ओषधे भव पीवो वृक्व उदारथिः। वही, 1.187.11
61. नवानां नवतीनां विषस्य रोपुषीणाम्। हरिष्ठा् मधु त्वा् मधुला चकार। वही, 1.191.13.